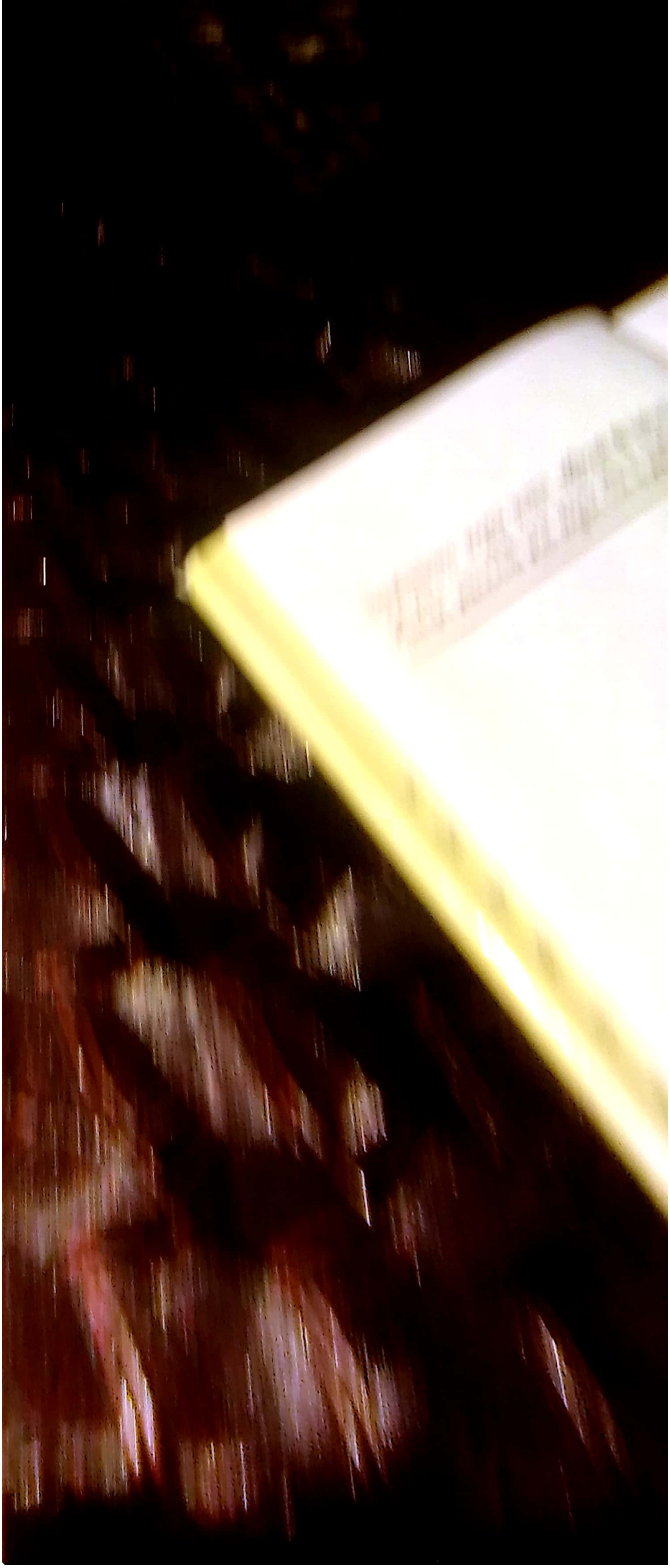

भारत — देश और लोग

उत्तर भारत के मंदिर

लेखक
कृष्णदेव

अनुवाद
ओमप्रकाश टंडन

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ISBN 978-81-237-4304-2

पहला संस्करण : 1971
पाँचवीं आवृत्ति : 2016 (*शक* 1938)
मूल अंग्रेजी © कृष्णदेव, 1969
हिंदी अनुवाद © राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
Temples of North India *(English Original)*
Uttar Bharat Ke Mandir *(Hindi)*

₹ 75.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

विषय-सूची

1 भूमिका 1
2 गुप्त और उत्तर गुप्तकालीन मंदिर 6
3 प्रारंभिक चालुक्य मंदिर 13
4 प्रतिहारकालीन मंदिर 16
5 राजस्थान के मंदिर 21
6 गुजरात के मंदिर 31
7 मध्य भारत के मध्ययुगीन मंदिर 36
8 दक्षिण शैली के मंदिर 47
9 उड़ीसा के मंदिर 51
10 परवर्ती चालुक्य अथवा होयसल मंदिर 58

चित्रों की सूची

चित्र मध्यपृष्ठ

1 गुप्तकालीन मंदिर, सांची
2 द्वार पार्वती मंदिर, नचना
3 ईंटों से निर्मित मंदिर, भीतरगांव
4 महाबोधि मंदिर, बोध गया
5 लक्ष्मण मंदिर, सिरपुर
6 विश्व-ब्रह्मा मंदिर, आलमपुर
7 सूर्य मंदिर, ओसियां
8 बदोली के मंदिर 24-25

9 अंबिकामाता मंदिर, जगत
10 विमल वसाही की छत, माउंटआबू
11 मंदिर नं० *III*, रोड
12 रानकदेवी मंदिर, वाधवान
13 सूर्य मंदिर, मोढ़ेरा
14 सास-बहू का मंदिर, ग्वालियर
15 विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो
16 कंदरिया महादेव मंदिर शिखर, खजुराहो 40-41

17 तेली का मंदिर, ग्वालियर (रंगीन)
18 मंदिर नं० *IV*,रोड (रंगीन)
19 कंदरिया महादेव मंदिर का शिखर, खजुराहो (रंगीन)
20 लिंगराजा मंदिर, भुवनेश्वर(रंगीन) 48-49

21 कंदरिया महादेव मंदिर की मूर्तिकला का दृश्य, खजुराहो
22 उदयेश्वर मंदिर, उदयपुर
23 परशुरामेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर
24 वैताल-देउल मंदिर, भुवनेश्वर
25 मुक्तेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर
26 अनंत वासुदेव मंदिर, भुवनेश्वर
27 सूर्य मंदिर, कोणार्क
28 केशव मंदिर, सोमनाथपुर 56-57

(मुख चित्र : मुक्तेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर)

उत्तर भारत के मंदिर अपनी विशिष्टताओं के उत्कृष्ट प्रतीक हैं। विभिन्न स्थापत्यकार व शिल्पकारों द्वारा संकल्पित इनकी विशेषताएं समस्त उत्तर भारत के मंदिरों में, जो हि[illegible] दक्षिण में कृष्णा घाटी तक विस्तृत है, पाई जाती है। आधारभूत विचार एक समान होने पर भी विभिन्न क्षेत्रों की शैलियों का विकास अपने ही ढंग से हुआ। ये विकास की धारा एवं स्थानीय विशिष्टताओं, कला की परंपरा तथा राजनैतिक व सांस्कृतिक परंपराओं की देन रहीं। प्रस्तुत पुस्तक में जहां गुप्त काल (5वीं सदी) से लेकर मध्य भारत व गुजरात के अवशिष्ट मंदिरों, जिनका निर्माण 8वीं व 9वीं सदी में हुआ, की विशिष्टताओं की जानकारी दी गई है, वहीं 10वीं सदी के आरंभ में मैसूर (कर्नाटक) राज्य में जिस विशिष्ट स्थापत्य शैली का प्रादुर्भाव हुआ, उसकी धारा के विकास के विभिन्न चरणों द्वारा स्थापत्य कला की असाधारण प्रगति व उत्कृष्टता को दर्शाया गया है।

nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA